अध्ययन सामग्री कक्षा - स्नातक भाग - 2.

विषय : संस्कृत

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
R.M.C SASARAM

Pali
7.7.2020
Paper - 3

Topic : शुकनासोपदेश के आधार पर लक्ष्मी की विशेषताओं का वर्णन : (शेषभाग)

सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति जनम् । गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति ।

सरस्वती देवी की कृपा से युक्त पुरुष (विद्वान्) को मानो ईर्ष्या के कारण आलिंगन नहीं करती। दया दाक्षिण्यादि गुणों से युक्त पुरुष को अछूत के समान छूती तक नहीं है।

उदारसत्वममंगलमिव न बहुमन्यते । सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति । अभिजातमहिमिव लङ्घयति । शूरं कण्टकमिव परिहरति । दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति । विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति । मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति ।

यह लक्ष्मी उदार पुरुष को अमंगल की भाँति आदर नहीं देती है तथा सज्जन को अपशकुन सा समझकर देखती तक नहीं है। कुलीन व्यक्ति को साँप समझ कर उसे लाँघ जाती है। वीर पुरुष को काँटा समझ कर उससे दूर रहती है, दानशील व्यक्ति को अशुभ स्वप्न समझ कर उसे याद तक नहीं करती है, नम्र पुरुष को पापी के समान समझ कर उसके पास नहीं जाती है, विद्वान् पुरुष का पागल की भाँति उपहास करती है।

→

परस्परविरुद्धमिन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजं चरितम् ।

यह लक्ष्मी परस्पर विरुद्ध इन्द्रजाल की भाँति संसार में अपना विपरीत सा आचरण दिखलाती है।

तथाहि — सततम् ऊष्मागमारोपयन्त्यपि जाड्यमुपजनयति । उन्नतिमादधाना अपि नीचस्वभावतामाविष्करोति ।

धनअभिमानरूपी गर्मी को उत्पन्न करती हुई भी मनुष्य में सदसद्ज्ञान से रहित जड़ता उत्पन्न करती है। उन्नति करती हुई भी नीचों के स्वभाव की ओर प्रेरित करती है।

शेषभाग →